

डॉ. फ्रेड पुटनम, भजन, व्याख्यान 4

© 2024 फ्रेड पुटनम और टेड हिल्डेब्रांट

भजन संहिता की पुस्तक पर यह डॉ. फ्रेड पुटनम की चौथी और अंतिम प्रस्तुति है। डॉ. पुत्नाम.

हमारे चौथे सत्र के लिए आपका पुनः स्वागत है। मैं बहुत संक्षेप में उस चीज़ पर लौटना चाहूँगा जिसे मैंने तीसरे के अंत में लटका हुआ छोड़ दिया था। और यह कई भजनों का प्रश्न है जो ईसाइयों के लिए काफी परेशान करने वाले हैं। जब मैं फिलाडेल्फिया के एक बड़े चर्च में था, तो हम हर तीन साल में जिम्मेदारी से स्तोत्र पढ़ते थे।

और एक बार मैंने देखा कि जैसे-जैसे हम पढ़ रहे थे, हम उस बिंदु पर आ गए जहाँ हमें भजन 137 पढ़ना चाहिए था और हमने इसे छोड़ दिया। और मैं चर्च सचिव के पास गया और कहा, हमने इसे क्यों छोड़ दिया? और उसने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, भजन पढ़ने के बाद हम ग्लोरिया पत्री गाते हैं। और मैं ने यह नहीं सोचा, कि हमें यह कहना चाहिए, कि वह कितना धन्य होगा, जो तेरे बालकों को पकड़कर चट्टान पर पटक देता है।

पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा। ठीक है, मैं उसके साथ लंबी बहस में नहीं जाना चाहता था, लेकिन मुझे लगता है कि यह उन भजनों के प्रति ईसाइयों की प्रतिक्रिया है जो भगवान से अपने दुश्मनों के लिए बहुत ही बुरी चीज़ें करने के लिए कहते हैं, जैसे कि भजन 35, जो पूछता है कि भगवान आकर्षित करते हैं भजनकार का पीछा करने वालों से निपटने के लिए एक भाला और एक कुल्हाड़ी उठाएँ या कि प्रभु का दूत उन्हें आगे बढ़ाए ताकि उनका रास्ता अंधेरा और फिसलन भरा हो और प्रभु मूल रूप से उन्हें नष्ट कर दें। और इसलिए, हम कहते हैं, दुनिया में क्या? हम ये बातें कैसे प्रार्थना कर सकते हैं? खैर, उस पर बहुत सारी प्रतिक्रियाएँ आई हैं।

कुछ लोगों ने कहा है, बहुत प्रसिद्ध लोगों ने कहा है कि ये उप-ईसाई हैं, ईसाइयों को इनका उपयोग नहीं करना चाहिए। वे आध्यात्मिकता के पहले के युग की अभिव्यक्ति हैं। सीएस लुईस एक व्यक्ति थे जिन्होंने ऐसा कहा था।

अन्य लोगों ने कहा है, ठीक है, ये वास्तव में एक प्रकार की जादुई दुनिया का प्रतिबिंब हैं जहाँ वे जादू-टोने में विश्वास करते थे और शब्दों में शक्ति होती है और वे उनके दुश्मनों को प्रभावित करने वाले होते हैं। खैर, इन सब बातों को छोड़कर, यह एक वैध प्रश्न है। यदि धर्मग्रंथ लाभदायक, अच्छा और सहायक है, हमारे लिए उपयोगी है, या शायद इसे कहने का एक बेहतर तरीका है, यदि यह भगवान के लिए उपयोगी है, तो वह हमारे लिए उपयोग करने के लिए एक उपकरण है, हम उन भजनों के साथ क्या करते हैं जो आह्वान करते हैं हमारे शत्रुओं का विनाश या भजनहार, कवि के शत्रुओं का? खैर, मैं कुछ सुझाव देता हूँ, इसे बहुत जल्दी करने का प्रयास करें, कुछ त्वरित सुझाव।

सबसे पहले, मुझे लगता है कि दुश्मनों के विनाश के लिए इस प्रकार की प्रार्थनाएँ सिर्फ भजनों में नहीं पाई जाती हैं। वे पवित्रशास्त्र के कई अंशों में पाए जाते हैं, जिनमें स्वयं ईसा मसीह भी

शामिल हैं, मैथ्यू 7.23। वह कहेगा, हे कुकर्मियों, मेरे पास से चले जाओ, मैं ने तुम को कभी नहीं जाना। अर्थात्, वह उन्हें नरक में भेजने जा रहा है।

प्रेरितों और पॉल के लेखों में ऐसे अंश हैं जहां वह निश्चित रूप से कहता है कि वे शापित हों। यहां तक कि स्वर्ग में आत्माओं के मुंह में, प्रकाशितवाक्य 6 में वेदी के नीचे, वे भगवान से पूछते हैं, हमारे खून का बदला लेने में आपको कितना समय लगेगा? और वे वहां हैं, वे स्वर्ग में हैं, उन्हें परिपूर्ण होना चाहिए, है ना? ठीक है, यदि वे परिपूर्ण हैं, तो वे प्रतिशोध की पुकार लगा रहे हैं। इससे स्तोत्र में दोषारोपण की उपस्थिति से भी बड़ी समस्या खड़ी होनी चाहिए।

मुझे लगता है कि यह दिखाता है, सबसे पहले, कि हमारे दुश्मनों पर प्रतिशोध या प्रतिशोध के लिए भगवान से प्रार्थना करने का यह विचार बाइबिल में सर्वव्यापी है। यह धर्मग्रन्थ में सर्वत्र है। हम इसे प्रभु की प्रार्थना में भी पाते हैं, क्योंकि प्रभु के राज्य के आने में उन लोगों का विनाश शामिल होगा जो उस राज्य का हिस्सा नहीं हैं।

यह एक ऐसी अवधारणा है जिससे छुटकारा पाना बहुत कठिन है। मैं इस बारे में सोचने के लिए कुछ कारण या तरीके सुझाता हूँ। एक है सीएस लुईस, हालांकि उन्होंने कहा कि ये उप-ईसाई नैतिकता की अभिव्यक्तियाँ थीं, उन्होंने यह भी कहा कि वे हमें दिखाते हैं कि बाइबिल के कवियों ने बुराई को हमारी तुलना में कहीं अधिक गंभीरता से लिया है।

कुछ बुराईयाँ ऐसी होती हैं जिनके लिए हम किसी धर्मान्तरित व्यक्ति के लिए प्रार्थना नहीं करते, हम केवल उस बुराई के विनाश के लिए प्रार्थना करते हैं। मुझे लगता है कि आज के युग में हमें इसे याद रखने की जरूरत है। जब हमारे समाज का मंत्र यह है कि सब कुछ समान रूप से मान्य है और कोई वास्तविक सही या गलत नहीं है, तो ये भजन कहते हैं, नहीं, गलत है।

और जब यह गलत है, तो यह इतना गलत है कि यह निंदनीय है और केवल विनाश के योग्य है। दूसरा विचार यह है कि, इनमें से किसी भी मामले में ऐसा नहीं होता है, ठीक है, एक अपवाद है, भजन 41.11, लेकिन अन्य सभी तथाकथित अशुद्ध भजनों में, भजनकार कभी भी अपने लिए शक्ति या अपने दुश्मनों को हराने की क्षमता या वह नहीं मांगता है। भगवान उनके साथ कुछ भी करने में उसकी मदद करेंगे। वह प्रार्थना करता है, हाँ, लेकिन फिर वह परिणाम भगवान पर छोड़ देता है।

और उनमें से प्रत्येक मामले में, भजन समाप्त होता है, जैसा कि हमने पहले देखा, इस विश्वास की अभिव्यक्ति और एक वादे के साथ कि वे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे या सभा में प्रभु की स्तुति करेंगे या कुछ और। विचार करने योग्य तीसरी बात यह है कि जब प्रभु इब्राहीम को बुलाते हैं, तो वह कहते हैं कि वह उन लोगों को शाप देंगे जो वास्तव में इब्राहीम के साथ हल्के व्यवहार करते हैं, या उसका अपमान करते हैं। अशुद्ध भजनों में, भजनहार के शत्रु वे हैं जो भजनकार पर हमला कर रहे हैं।

प्रत्येक मामले में, भजनकार अपनी बेगुनाही का विरोध करता है और कहता है, वे बिना कारण मुझ पर हमला कर रहे हैं। वे वास्तव में बिना कारण मुझ पर हमला कर रहे हैं। वे मुझसे ऐसी बातें पूछते हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता।

और यह वाचा के अभिशाप का परिणाम है कि जो लोग बुराई करते हैं उन्हें उनकी बुराई का सामना करना पड़ेगा जो उन्होंने किया है। और जो शाप भजनकार ने दिए हैं या वे वास्तव में शाप नहीं हैं, वे न्याय के लिए प्रार्थनाएँ हैं, जो भजनकार ईश्वर को देता है वे अनुरोध हैं कि ईश्वर अपने चरित्र के प्रति सच्चा होगा और वह जो सही है उसका कारण बनाए रखेगा। क्योंकि ईश्वर, कई अन्य चीज़ों के अलावा, एक न्यायाधीश है।

इसके अलावा, जब हम इनमें से कई को देखते हैं, तो मैं इस समय विशेष रूप से भजन 35 के बारे में सोच रहा हूँ। इसमें कहा गया है, दुर्भावनापूर्ण गवाह उठते हैं, मुझसे ऐसी बातें पूछते हैं जो मैं नहीं जानता। वे भलाई के बदले बुराई से मुझ से बदला लेते हैं।

और वह कहता है, वे बिना कारण मेरी निन्दा करते हैं। व्यवस्थाविवरण 19 में एक बहुत ही दिलचस्प प्रावधान है। व्यवस्थाविवरण 19 में, अध्याय के अंत में, हम इसे पढ़ते हैं।

यदि कोई अपने भाई पर ऐसे अपराध या पाप का आरोप लगाता है जो उसने नहीं किया है, तो आरोप लगाने वाले को उस अपराध के अनुरूप सज़ा मिलेगी। ये लोग कवि पर आरोप ला रहे हैं। प्रत्येक मामले में, इन सभी भजनों में किसी न किसी प्रकार का मौखिक आरोप है।

कविता में हम सुनें या न सुनें, आरोप तो है ही। वे उस पर आरोप लगा रहे हैं। उनका कहना है कि वे उन पर झूठा आरोप लगा रहे हैं।

अनुबंध कहता है कि झूठे गवाहों को वह सज़ा मिलती है जो दोषियों को मिलती है यदि वे उस अपराध के दोषी हैं। तो, वह बस प्रभु से कह रहा है, अपनी वाचा कायम रखो। दिलचस्प बात यह है कि वह खुद ऐसा करने की कोशिश भी नहीं कर रहे हैं।

वह उन पर मुकदमा नहीं कर रहा है। वह बस इतना कह रहा है, हे प्रभु, अपने वचन के प्रति वफादार रहो। इसलिए मुझे लगता है कि स्तोत्रों में दी गई निंदाओं को पढ़ते समय, ये निर्णय की मांग करते हैं, हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि ये एक धर्मी न्यायाधीश के रूप में ईश्वर से अपील हैं।

ईश्वर नहीं बदलता, उसके न्याय की प्रकृति नहीं बदलती, न ही अपने लोगों के साथ उसका रिश्ता या दुष्टों के साथ उसका रिश्ता बदलता है। क्या परमेश्वर के लोग ये प्रार्थनाएँ कर सकते हैं? मुझे स्वयं यह बहुत कठिन प्रश्न लगता है क्योंकि बहुत कुछ है, अक्सर जब मैं उनसे प्रार्थना करने के लिए प्रलोभित होता हूँ, तो मेरे अंदर इतना सारा अनुभव घुला हुआ होता है कि मैं प्रतिशोध चाहता हूँ या किसी गलत चीज़ के लिए कुछ चाहता हूँ जो मैंने सोचा था कि किया गया है। लेकिन वे केवल इसलिए उपयुक्त प्रतीत होते हैं क्योंकि वे सिद्धांत का हिस्सा हैं।

हम उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं करते या उनसे दूर नहीं जाते। इसके बजाय, हम कभी-कभी कहते हैं, हाँ, भगवान, इन चीज़ों के लिए प्रार्थना करना उचित है क्योंकि केवल आप ही उस न्याय को स्थापित कर सकते हैं जिसे करने की आवश्यकता है। मैं बाइबिल की कविताओं के बारे में सोचते समय एक और मुख्य प्रश्न की ओर मुड़ना चाहूंगा और फिर संक्षेप में भजन 1 को देखूंगा। यही वह

प्रश्न है जिसका मैंने पहले दूसरे व्याख्यान में उल्लेख किया था, मेरा मानना है कि छवियों के बारे में।

हम इन छवियों के साथ क्या करते हैं? मैं आपको कुछ पंक्तियाँ पढ़कर सुनाता हूँ। भजन 18 पद 2, यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़, और मेरा छुड़ानेवाला है। मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है, जिस में मैं शरण लेता हूँ, वह मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, मेरा गढ़ है।

अपना कान मेरी ओर लगाओ, यह भजन 31 पद 2 और 3 है। मुझे शीघ्र छुड़ाओ, मेरे लिये दृढ़ चट्टान, और मुझे बचाने के लिये दृढ़ गढ़ बनो, क्योंकि तुम मेरी चट्टान और मेरा गढ़ हो। क्या डेविड चट्टानों की पूजा कर रहा है? शायद नहीं। यह उसे एक लिथोलॉजिस्ट बना देगा।

वास्तव में हमारे पास बाइबल में प्रशंसित बहुत कुछ नहीं है। चट्टानों की पूजा करने के कारण दाऊद को निश्चित रूप से कभी पत्थर नहीं मारा गया। यमक के लिए खेद है।

तो, यहाँ क्या हो रहा है? खैर, हम सभी सहज रूप से जानते हैं कि कोई कब अलंकार का प्रयोग करता है। तो कोई कहता है, आज कैसे हो? ओह, मैं हार गया हूँ। या मैं बहुत थक गया हूँ।

या मैं बस रो सकता था। ठीक है, शायद आप सिर्फ रो सकते हैं, लेकिन यदि आप प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं तो आप मरे नहीं हैं। जब तक आपकी पीठ पर धारियाँ न हों, संभवतः आपको भी नहीं पीटा गया।

इसलिए, हम बस उन चीजों को संसाधित करते हैं, बिना यह जाने कि हम छवियों का उपयोग कर रहे हैं, कि हम उन चीजों का उपयोग कर रहे हैं जिन्हें रूपक कहा जाता है। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि कुछ चीजें, हमारे दिमाग को उन चीजों से जूझना चुनौतीपूर्ण लगता है जो हमारी इंद्रियों के बाहर नहीं हो सकती हैं, जो अतिरिक्त हैं। यानी हम छू नहीं सकते।

तो हम सत्य के बारे में कैसे बात करें? हम अच्छाई के बारे में कैसे बात करें? खैर, किसी अमूर्त चीज़ के बारे में बात करना बहुत कठिन है। और बहुत जल्द यदि आप यह प्रश्न पूछें कि अच्छाई का क्या अर्थ है? बातचीत में इसे आजमाएँ। बहुत जल्द यह पता चल जाएगा कि क्या यह कार्रवाई अच्छी है? या यह क्रिया खराब है? या क्या यह कला का काम अच्छा है? या यह बहुत जल्दी ठोस हो जाएगा क्योंकि हमें उन चीज़ों से जूझने में परेशानी होती है जिन्हें हम छू नहीं सकते या देख नहीं सकते।

खैर, जिन चीज़ों को हम छू या देख नहीं सकते उनमें से एक स्वयं ईश्वर है। और इसलिए बाइबल परमेश्वर के लिए अनेक, अनेक, अनेक, अनेक छवियों का उपयोग करती है। और यहां तक कि भजन 18 पद दो में भी, हमारे पास ये सभी छवियाँ हैं, एक चट्टान, एक किला, एक उद्धारकर्ता, एक चट्टान, एक आश्रय, एक ढाल, एक मोक्ष का सींग, और मेरा गढ़।

हे भगवन्, क्या यह किराने की सूची है, या क्या हो रहा है? खैर, यहां छवियों के बारे में सोचने का एक बहुत ही संक्षिप्त और मुझे आशा है कि आसान तरीका है। हम उन चीज़ों को समझने के लिए रूपकों का उपयोग करने में सक्षम हैं जिन्हें हम भौतिक रूप से समझ नहीं सकते हैं या देख नहीं

सकते हैं क्योंकि चट्टान, किले और चट्टान जैसे रूपकों के हमारे उपयोग के नीचे एक मूलभूत रूपक है जो बहुत बड़ा है और जो उन सभी को शामिल करता है, जिन्हें हम साहित्यिक रूपक कह सकते हैं सतह पर, पाठ में यही बातें हैं। तो, यह किस प्रकार की चट्टान है? खैर, आपका अनुवाद कमाल कह सकता है।

इस चट्टान को उठाया या हिलाया या ले जाया या बुलडोजर से नहीं चलाया जा सकता। यह गतिशील हो सकता है। आप इसे डायनामाइट से उड़ाने में सक्षम हो सकते हैं, लेकिन आप इसके साथ कुछ नहीं कर सकते।

इसके बजाय, यह बहुत ऊँचा स्थान है। यदि आपने कभी मृत सागर स्क्रॉल की तस्वीरें देखी हैं और आप देखते हैं कि वे वादियाँ कितनी खड़ी हैं, वे घाटियाँ कितनी खड़ी हैं, तो डेविड इसी बारे में बात कर रहे हैं। यदि आप उनमें से किसी एक के ऊपर हैं, तो आप सुरक्षित हैं।

जब दाऊद ने शाऊल से पानी का घड़ा और भाला चुराया, तो यह कहता है कि वह रास्ते में चला गया और फिर वह और शाऊल एक-दूसरे को चिल्ला रहे थे। और आप सोचते हैं, एक सेकंड रुकिए, अगर वे चिल्लाने की दूरी पर हैं, तो शाऊल डेविड पर नज़र रखने के लिए लोगों का एक छोटा समूह क्यों नहीं भेजता? क्योंकि यदि आप कभी यहूदिया के जंगल की उन तस्वीरों को देखें, जहां डेविड था, तो आप देखेंगे कि उसे इस लंबी खड़ी घाटी के चारों ओर से लोगों को भेजना पड़ा होगा। घाटी की दीवारें इतनी ऊंची हैं कि चढ़ना मुश्किल है।

जिन गुफाओं में मृत सागर के स्क्रॉल पाए गए थे, उनमें जाने का एकमात्र रास्ता ऊपर से रस्सियाँ ही थीं। वे ऊपर नहीं चढ़ सके। आप ऊपर नहीं चढ़ सके।

और यदि आपके पास एक धनुष और कुछ तीर और एक भाला और एक भाला और एक तलवार और एक ढाल है तो आप निश्चित रूप से ऊपर नहीं चढ़ सकते। आप इसे कभी नहीं बना पाएंगे। वे बस आप पर कुछ चट्टानें गिरा देंगे और अंत हो जाएगा।

तो, डेविड इस चट्टान के शीर्ष पर है। वह बिल्कुल सुरक्षित है। शाऊल उस तक नहीं पहुँच सकता।

वह भाला से काफी दूर है, जिसकी दूरी काफी कम है क्योंकि वहां काफी भारी हथियार है, भाला नहीं पहुँच सकता। और यह रात का समय है इसलिए कोई भी वैसे भी गोली नहीं चला सकता या फेंक नहीं सकता। तो, उसे चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

और फिर यह कहता है कि जब शाऊल ने उसे लेने जाने की कोशिश की, तो दाऊद और उसके लोग भाग गए। वे बस दूसरी चट्टान पर चले गए। खैर, वह इसी बारे में बात कर रहा है।

और यही बात जब वह किसी किले के बारे में बात करते हैं। यह एक किला है। यह वास्तव में एक किला नहीं है, क्रूसेडर महल के बारे में मत सोचो।

यह एक दृढ़ स्थान है, एक ऐसा स्थान जो रक्षा का एक प्राकृतिक स्थान है जिसे बनाया गया है। शायद दरारों को भरने के लिए चट्टानें थीं या, आप जानते हैं, एक पास। ऐसा हुआ है, सैन्य भाषा का उपयोग करने के लिए इसके सुरक्षात्मक स्तर को बढ़ाया गया है।

तो अब यह शरण का सच्चा स्थान है, जो वास्तव में वह कहता है, मेरा भगवान मेरी चट्टान है जिसमें मैं शरण लेता हूँ। एक अन्य प्रकार की चट्टान। इस बार हम बात कर रहे हैं एक चट्टान की।

और यदि आप चट्टान के शीर्ष पर हैं, तो कोई भी आपके बाद ऊपर नहीं जाएगा। वे आप तक नहीं पहुंच सकते। और यहां तक कि एक ढाल भी, यदि आप ढाल के पीछे हैं, तो आप सुरक्षित हैं।

यह केवल तभी होता है जब आप ढाल के सामने या ढाल के पास होते हैं या आपका ढाल वाहक ढाल गिरा देता है। तभी आप मुसीबत में होते हैं। या यदि आप बहुत लंबे हैं और आपका सिर गोलियथ की तरह झुका हुआ है, तो आप भी परेशानी में हैं।

और ईश्वर भी है, वे कहते हैं, मेरा गढ़, मेरा गढ़, कुछ अनुवाद कह सकते हैं। ठीक है, आप देख रहे हैं कि उन सभी में जो समानता है वह यह वास्तव में अच्छा विचार है कि भगवान एक सुरक्षित स्थान है। अब हम यह भी कहेंगे कि ईश्वर सुरक्षित स्थान या सबसे सुरक्षित स्थान या ऐसा ही कुछ है।

लेकिन आप देखिए, यह एक नींव की तरह है। और क्योंकि यह सत्य है, ईश्वर के कारण, हम ईश्वर को एक सुरक्षित स्थान के रूप में सोच सकते हैं। अब, अचानक, डेविड किसी भी शब्द का उपयोग कर सकता है जो एक सुरक्षित स्थान, एक चट्टान, एक चट्टान, एक किले, एक गढ़ को दर्शाता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यहां तक कि एक ढाल भी।

वास्तव में, हम भजन 131 में एक ही छवि, बहुत अलग, लेकिन एक ही मूलभूत रूपक पाते हैं, जब भजनकार अपनी माँ की गोद में बैठे दूध छुड़ाए बच्चे के रूप में रेंगने की बात करता है। यह एक सुरक्षित जगह है। तुम्हारी माँ की गोद क्या है? हम सोचते हैं कि एक दूध छुड़ाया हुआ बच्चा, एक दूध छुड़ाया हुआ बच्चा क्यों? क्योंकि बच्चे को दूध चाहिए।

नहीं, यह दूध छुड़ा चुका है, इसे दूध की जरूरत नहीं है। यह भोजन के लिए नहीं, बल्कि आराम या सुरक्षा या लाड़-प्यार या किसी और चीज़ के लिए है। यह नहीं हो रहा है, यह वही मूलभूत छवि है।

इसलिए, जब हम रूपकों को देखते हैं, तो हम खुद से पूछना चाहते हैं कि इसके नीचे क्या छिपा है? देखिए, लंबे समय तक इन शब्दों में रूपकों के बारे में सोचना लोकप्रिय था। भगवान मेरी चट्टान है। भगवान चट्टान की तरह कैसे है? खैर, सबसे पहले, मुझे यह जानना होगा कि हम किस प्रकार की चट्टान के बारे में बात कर रहे हैं।

और फिर परमेश्वर उस प्रकार की चट्टान के समान कैसे है? भरोसेमंद, सुरक्षित, भरोसेमंद आदि। ठीक है, ये सभी बातें सच हैं। लेकिन आप देखिए, जब हम मूलभूत रूपकों के संदर्भ में सोचना

शुरू करते हैं तो क्या होता है, अब हम देखते हैं कि ये सभी व्यक्तिगत कथन बिल्कुल भी व्यक्तिगत कथन नहीं हैं।

वे एक पेड़ की शाखाएँ हैं जो जड़ से निकलती हैं और जड़ ही है जो पूरी चीज़ को एक साथ रखती है। वे विभिन्न स्तरों वाली एक गगनचुंबी इमारत की कहानियाँ हैं। लेकिन रूपक, बुनियाद, वह बुनियाद है।

मैं फिलाडेल्फिया में देखता था जब वे कुछ सबसे ऊंची इमारतें बना रहे थे, जो अब सबसे ऊंची गगनचुंबी इमारतें हैं। और यह आश्चर्यजनक था कि उन्हें कितनी दूर तक निर्माण करना था और कितने सैकड़ों और सैकड़ों और सैकड़ों ये विशाल कंक्रीट ट्रक नीचे गए और बस अपना कंक्रीट फेंक दिया और फिर और अधिक के लिए वापस ऊपर चले गए। यह एक अनवरत जुलूस था।

ठीक है, यदि आपके पास उस प्रकार की नींव है, तो आप उसके ऊपर लगभग कुछ भी बना सकते हैं। और वैसा ही होता है। हमारा यह विचार है कि ईश्वर एक स्थान है।

हमारे लिए बहुत अजीब है क्योंकि हमारी संस्कृति में, निस्संदेह, हम भगवान को एक व्यक्ति के रूप में सोचते हैं। लेकिन बाइबिल के समय के बारे में सोचो। तुम कभी नहीं जानते थे कि कब अमालेकवासी पहाड़ी के पार आएँगे और तुम्हारे घर पर आक्रमण करेंगे और तुम्हें नष्ट कर देंगे या जो कुछ तुम्हारे पास था उसे नष्ट कर देंगे और तुम्हें और तुम्हारे परिवार को दास बना लेंगे।

तुम कभी नहीं जानते थे कि अरबी या पूर्व के गोत्र या अम्मोनी या मोआबी या कोई और कब आ सकते हैं। इसलिए, सुरक्षा के स्थान उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण, निर्णायक थे। हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण नहीं है, खासकर संयुक्त राज्य अमेरिका में, हम किलेबंद शहरों में नहीं रहते हैं।

वास्तव में, हमारे पास कहीं भी शहर की दीवारें नहीं हैं, सिवाय इसके कि मुझे लगता है कि उत्तरी अमेरिका में एकमात्र क्यूबेक सिटी है। कम से कम यही एकमात्र ऐसा है जिसके बारे में मैं जानता हूँ। और यह केवल पुराना हिस्सा है जब यह एक फ्रांसीसी किला था।

खैर, रूपक एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हमें न केवल शब्दों के अर्थ के संदर्भ में सोचने की ज़रूरत है बल्कि इसका उनकी संस्कृति में क्या अर्थ हो सकता है। और फिर उसका आधार क्या है? क्योंकि अंतर्निहित चीज़ तक पहुंचना ही इसे हमारे लिए भी अर्थ देता है। आप देखिए, मुझे इसे थोड़ा बढ़ाने दीजिए।

हमारी संस्कृति के बारे में सोचो। क्या आप जानते हैं कि किसी चर्च जैसे लोगों के जमावड़े में, संभवतः उस चर्च की चार में से कम से कम एक महिला के साथ दुर्व्यवहार किया गया था? अब, और कई बार माता-पिता, पिता या सौतेले पिता द्वारा। अब, हम यह कहने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं, ऐसा कोई व्यक्ति कह सकता है, आप जानते हैं, मैं ईश्वर को अपने पिता के रूप में नहीं सोच सकता।

क्षमा मांगना। मैं ये सुनना नहीं चाहता। और मैंने उन परामर्शदाताओं को पढ़ा है जिन्होंने कहा है कि यह कठिन है।

उन्हें इससे उबरना होगा. बाइबिल यही कहती है. भगवान तुम्हारे पिता हैं.

आपको इसके साथ रहना होगा. या भगवान एक राजा है. और वह एक और पितातुल्य, प्राधिकारी व्यक्ति है।

भगवान एक न्यायाधीश है. और वे बस, वे इससे कोई लेना-देना नहीं चाहते हैं। क्या होगा अगर हमने इसके बजाय कहा, ठीक है, एक पिता के रूप में भगवान केवल एक खिड़की है जो यह बताती है कि भगवान कौन है।

वह केवल एक रूपक है. यह कोई शाब्दिक कथन नहीं है. ईश्वर आपके भौतिक पिता की तरह शाब्दिक पिता नहीं है।

नहीं, यह एक खिड़की है जो हमें ईश्वर के कुछ पहलुओं की तस्वीर देती है। इस बारे में कैसा है? भगवान एक सुरक्षित स्थान है. खैर, जिन लोगों को सुरक्षित जगह की जरूरत होती है, वहीं कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें पिता से भी ज्यादा सुरक्षित जगह की जरूरत होती है।

और यह हो सकता है कि जैसे ही वे ईश्वर को उस स्थान के रूप में जानते हैं जहाँ वे जा सकते हैं और सुरक्षित रह सकते हैं, किसी दिन वे भी उस स्थान पर आएँगे, यह कहने में सक्षम होने की स्थिति में कि ईश्वर उनके पिता या उनके राजा भी हैं या भगवान या न्यायाधीश. क्योंकि बाइबल इस तरह की छवियों का उपयोग हमें उस चीज़ को समझने में मदद करने के लिए करती है जिसे हम नहीं समझ सकते हैं। यदि आप इसके बारे में सोचते हैं, तो एक रूपक एक खिड़की की तरह होता है, लेकिन एक सामान्य खिड़की के विपरीत, आप उस तक नहीं जा सकते हैं और अपना सिर अंदर डालकर पूरे कमरे में नहीं देख सकते हैं।

आप केवल एक ही स्थान से थोड़े संकीर्ण स्लॉट से अंदर देख सकते हैं। और उस संकीर्ण स्लॉट के माध्यम से, आपको कमरे का केवल एक बहुत ही सीमित दृश्य मिलता है। खैर, कुछ कमरों में पाँच या छह खिड़कियाँ होती हैं, इसलिए आप कमरे के हर हिस्से को देख सकते हैं, लेकिन आप कभी भी पूरे कमरे को नहीं देख सकते।

यदि आप उन सभी को जोड़ भी दें, तो भी आपको पूरा कमरा दिखाई नहीं देगा। और इस पर विचार करें, ईश्वर एक अनंत कक्ष है। इसलिए, बाइबिल में सभी रूपक, यदि आप उत्पत्ति से रहस्योद्घाटन तक पढ़ते हैं और भगवान के लिए प्रत्येक रूपक को लिखते हैं, तो आप भगवान कौन हैं इसके लिए रूपक संभावनाओं को समाप्त करना शुरू भी नहीं करेंगे।

और भजनहार को इसकी खोज करने में आनंद आता है। इसलिए, वे केवल एक न्यायाधीश के रूप में ईश्वर के बारे में बात नहीं करेंगे। भजन 98, मैंने पहले व्याख्यान में कहा था कि दुनिया का आनंद इसी पर आधारित है।

भजन 98 का पूरा मतलब क्या है? वह भगवान न्यायाधीश बनकर आते हैं। वह दुनिया का न्याय करने जा रहा है। तो, क्या होता है? सृष्टि तालियाँ बजाकर, पूजा करके और गाकर प्रतिक्रिया देती है।

और हमें पूजा और गायन द्वारा प्रतिक्रिया देने के लिए बुलाया गया है। परमेश्वर ने जो किया है उसके कारण, हाँ, भजन 98 के एक से तीन पद, परन्तु परमेश्वर एक न्यायाधीश के रूप में क्या करने जा रहा है उसके कारण। आप कहते हैं, एक सेकंड रुकें, लेकिन ईश्वर इतना ही नहीं करेगा।

वह एक उद्धारकर्ता भी बनने जा रहा है। यह सही है। वह एक उद्धारकर्ता बनने जा रहा है।

वह उद्धारकर्ता बनने जा रहा है। वह वह सब कुछ होगा जो बाइबल उसके बारे में कहती है और उससे भी कहीं अधिक, हमारे स्वप्न से भी परे। लेकिन यह एक बात है कि वह होगा, वह अभी है, वह रहेगा, जैसे वह भी एक सुरक्षित स्थान है।

और इसलिए, क्योंकि यह सच है, डेविड उन सभी प्रकार की सुरक्षित जगहों पर खेल सकता है जिनके बारे में वह जानता है। और वह उन सभी को इस, लगभग इसी, सुरक्षा की इस सिम्फनी में सूचीबद्ध कर सकता है। और उसका उद्देश्य, उसके उद्देश्य का एक हिस्सा हमें इस विचार से अभिभूत करना है कि ईश्वर किसी भी चीज़, किसी भी चीज़, जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं, से अधिक सुरक्षित है।

खैर, हम इसके बारे में सोच सकते हैं, ऐसे बहुत से रूपक हैं जो सिर्फ भगवान के बारे में नहीं हैं। मेरा मतलब है, लोगों के बारे में बहुत सारे रूपक हैं। हम धूल हैं, हम पौधे हैं।

भजन 90 जैसे सभी छंदों के बारे में सोचें, जहां वह कहता है, भजन मूसा कहता है कि, सुबह में, वे घास की तरह होते हैं जो नए सिरे से उगती है। सुबह यह नये सिरे से फलता-फूलता और अंकुरित होता है। शाम होते-होते यह मुरझा जाता है और सूख जाता है।

लोग पौधे हैं। यह एक और रूपक है। भगवान एक सुरक्षित स्थान है।

लोग पौधे हैं। लोग भी अन्य चीजें हैं। लेकिन लोग तो पौधे हैं।

और आप जानते हैं कि पौधों के बारे में क्या सच है? पौधे बढ़ते हैं, फल लगते हैं, फल लगना बंद हो जाते हैं, मर जाते हैं, सड़ जाते हैं। अरे, एक इंसान की तरह लगता है, है ना? वास्तव में, जब वह पौधों, घास के रूप में लोगों की उस छवि के बारे में बात करते हैं जो सुबह उगती है और शाम को मुरझा जाती है, तो वह वास्तव में दो अलग-अलग मौलिक रूपकों का संयोजन कर रहे होते हैं। एक तो यह कि जीवन एक दिन है, सूर्योदय से सूर्यास्त तक, आपको बस इतना ही मिलता है।

और लोग पौधे हैं। अब हम इस बारे में बात कर सकते हैं, आप जानते हैं, इज़राइल में किस प्रकार के पौधे अचानक बाढ़ के बाद उगते हैं, वे बड़े होते हैं और वे बहुत तेज़ी से अंकुरित होते हैं। और एक या दो सप्ताह में, वे पूरी तरह से ख़त्म हो जायेंगे।

तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि वे वहाँ रहे हैं। वे बढ़ते हैं, खिलते हैं, परागित होते हैं, मर जाते हैं। अच्छा, हाँ, वह इसी बारे में बात कर रहा है।

दिन तो रूपक है ही, दिन जीवन का भी रूपक है। तो, इस बारे में सोचें। यदि जीवन एक दिन है और दिन के अंत में हम सो जाते हैं, तो शायद मृत्यु भी एक नींद है।

इसलिए, जब बाइबल कहती है, नींद के रूप में मृत्यु के बारे में बात करती है, यीशु जॉन 11 में लाजर के बारे में बात करते हैं, या पॉल 1 कुरिन्थियों 15 में पुनरुत्थान के बारे में बात करते हैं, तो वे मृत्यु के प्रभावों को कम करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। मृत्यु क्या है यह देखने के लिए मृत्यु क्या है। हम इसका वर्णन नहीं कर सकते।

हम नहीं जानते कि यह क्या है। हम बस इतना जानते हैं कि यह क्या नहीं है। यह जीवन नहीं है, है ना? जीवन रुक जाता है, तुम मर चुके हो।

ठीक है। अब क्या? खैर, हम इस बारे में इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकते। तो, नींद के रूप में मृत्यु का रूपक हमें एक संभाल देता है, एक ऐसा अनुभव जिसे हम किसी ऐसी चीज़ से जोड़ सकते हैं जिसे हम अनुभव नहीं कर सकते।

ठीक है, आप समझते हैं कि मैं यहाँ धार्मिक रूप से बात नहीं कर रहा हूँ। तो फिर यदि जीवन एक दिन है और, मेरी उंगली उठाने के लिए खेद है, यदि जीवन एक दिन है और यदि मृत्यु एक नींद है, तो जब हम रात को सोने जाते हैं, तो आप और मैं अगली सुबह जागने की उम्मीद करते हैं और अगली सुबह जागने की ऊपर पुनरुत्थान है। यह एक नया दिन है।

और वास्तव में, हमें रहस्योद्घाटन से पता चलता है कि यह एक नए प्रकार का दिन है जब अधिक रातें नहीं होंगी। तो, चर्च के इतिहास की थोड़ी सी सामान्य जानकारी। यूनानियों ने अपने मृतकों को नेक्रोपोलिस, मृतकों के शहर, नेक्रोस मृत, पॉलस शहर, मृतकों के शहर में दफनाया था।

ईसाइयों ने अपने मृतकों को दफनाना शुरू कर दिया। एक आरंभिक चर्च फादर, मैं इस उद्धरण या इस विवरण का कभी पता नहीं लगा सका, ने कहा, ईसाई अपने मृतकों को नेक्रोपोलिस में नहीं दफनाते हैं। ईसाई अपने मृतकों को कब्रिस्तान यानी बैरक में दफनाते हैं, क्योंकि ईसाई सैनिक हैं जो केवल अपने सेनापति, स्वयं भगवान की तुरही के इंतजार में सोते हैं, जो उन्हें युद्ध के लिए बुलाता है।

और इसीलिए ईसाइयों को कब्रिस्तानों में दफनाया जाता है, यह शब्द अभी ग्रीक से लिया गया है, नेक्रोपोलिस में नहीं। आप जीवन के रूपक को एक दिन के रूप में देखते हैं, मृत्यु नींद है, यह बोस्टन में बड़ी खुदाई की तरह है, एक सुरंग जो शहर के नीचे है, जो खत्म होने पर, किसी को

कभी भी पता नहीं चलेगा कि वह सतह पर घूम रही है। यह एक विशाल गगनचुंबी इमारत की विशाल नींव की तरह है जो पूरी तरह से अदृश्य है, लेकिन इसके बिना, गगनचुंबी इमारत ढह जाती है।

पूरी बाइबिल उनसे भरी हुई है। मेरा विश्वास करो, मैं उनके बारे में घंटों और दिनों तक बात कर सकता हूँ, लेकिन मैं आगे बढ़ने जा रहा हूँ। मैं भजन 1 को संक्षेप में देखना चाहूँगा। भजन 1, मुझे पता है कि यह एक बहुत ही परिचित भजन है, और मैं केवल कुछ चीजों को इंगित करने में सक्षम हूँ, लेकिन मैं आपको यह दिखाना चाहता हूँ कि इसमें से कुछ की शुरुआत क्या होती है जब हम किसी पाठ को बारीकी से देखते हुए इसे एक साथ रखते हैं तो ऐसा दिखता है।

भजन 1 बहुत प्रसिद्ध रूप से शुरू होता है, धन्य वह मनुष्य है जो दुष्टों की सलाह पर नहीं चलता, ठट्ठा करने वालों की सभा में खड़ा नहीं होता, या ठट्ठा करनेवालों की सभा में नहीं बैठता। मुझे यह सुझाव देने दीजिए. वे तीन वाक्य अंग्रेजी में समानांतर हैं, वे हिब्रू में भी समानांतर हैं।

वहाँ थोड़ी बहुत उथल-पुथल चल रही है, लेकिन मूलतः वे समानांतर हैं। वे सभी क्रिया के एक ही रूप का उपयोग करते हैं, वास्तव में, जाहिर तौर पर अलग-अलग क्रियाएं हैं। और मुझे लगता है कि इस मामले में, जब हम पद्य एक में शामिल रूपक के बारे में सोचते हैं, तो वास्तव में थोड़ा गलत अनुवाद होता है।

तीसरी पंक्ति में एक संज्ञा है जिसका अनुवाद आमतौर पर सीट होता है। यह एक संज्ञा है, मोशव एक क्रिया यशव से आया है, जिसका अर्थ अक्सर बैठना होता है। लेकिन संज्ञा के बारे में दिलचस्प बात यह है कि इसका अर्थ केवल एक या दो बार ही होता है।

लगभग हर बार यह बाइबल में आता है, इसका अर्थ वह स्थान है जहाँ लोग रहते हैं। और इसका अनुवाद आमतौर पर आवास या आवास के रूप में किया जाता है। और जिस क्रिया का अनुवाद सिट किया गया है उसका मतलब निवास करना या बसना या बसना भी हो सकता है।

शान्त होना। तो, श्लोक एक में क्या चल रहा है? शायद वह इसी बारे में बात कर रहा है। शायद रूपक यह है कि जीवन एक यात्रा है और आप कहाँ पहुँचेंगे यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहाँ से शुरू करते हैं।

तो आप अपनी यात्रा कैसे शुरू करते हैं? यदि आप कल किसी ऐसी जगह की यात्रा करने जा रहे हैं जहाँ आप कभी नहीं गए हैं, तो आप आमतौर पर ऐसा करते हैं, ठीक है, मुझे लगता है कि आज आप Google पर जाते हैं और ऑनलाइन मानचित्र ढूँढते हैं, लेकिन हम आमतौर पर इसे देखकर ऐसा करते हैं मानचित्र या लोगों से पूछ रहे हैं, क्या आप कभी स्कैंटन या कहीं भी गए हैं? और वहाँ पहुँचने का सबसे अच्छा तरीका क्या है? खैर, देखें कि यह व्यक्ति कहां से शुरू करता है या कहां से शुरू नहीं करता है। वह दुष्टों के पास जाकर उनसे सलाह मांगने से शुरुआत नहीं करता है। परामर्श यही है, सलाह।

वह वहाँ से शुरू नहीं होता। और क्योंकि वह अपनी यात्रा उस तरह की सलाह के साथ शुरू नहीं करता है, वह अंत में पापियों के उस रास्ते पर नहीं चलता है जिस पर पापी चलते हैं। और जब वह

उस स्थान पर पहुंचता है जहां वह बसने वाला है, तो वह उस स्थान पर नहीं बस रहा है जहां ठट्ठा करने वाले रहते हैं।

अब आप पूछ सकते हैं, क्या यह सचमुच इतना महत्वपूर्ण है? मेरा मतलब है, स्थिर होने और बैठने में क्या अंतर है? खैर, मुझे लगता है कि बैठने से रूपक की बात खत्म हो जाती है, और रूपक कुंद हो जाता है। और इसके बजाय यह रूपक कि जीवन एक यात्रा है हमें याद दिलाता है कि हम एक यात्रा पर हैं। आप जानते हैं, जीवन एक यात्रा है जैसे मूलभूत रूपक का कारण आप और मैं जीवन, हमारे जीवन की कल्पना नहीं कर सकते।

हम घटनाओं के बारे में सोच सकते हैं. हम आशाओं, आकांक्षाओं और निराशाओं के बारे में सोच सकते हैं। हम शायद उपलब्धियों के बारे में सोच सकते हैं, लेकिन हम वास्तव में अपने जीवन को एक वस्तु के रूप में नहीं सोच सकते।

मेरी जिंदगी, तुम्हारी जिंदगी. इसलिए इसके बजाय, हम जीवन को एक यात्रा के रूप में बात करते हैं। हम इसे हर समय उपयोग करते हैं।

हम कहते हैं, हे, उसने वास्तव में एक चक्कर लगाया या वह काम एक मृत अंत था। या फिर उसने अपने रास्ते में बस एक स्पीड बम्प मारा। या आप कहां पहुंचने की आशा करते हैं? आपका लक्ष्य क्या है? आप वहाँ जाने के लिए कैसे जा रहे हैं? यह विचार कि जीवन एक यात्रा है, हमारे सोचने के तरीके में इतना बुनियादी है कि हमें इसका एहसास ही नहीं होता कि यह एक रूपक है।

वास्तव में, कई बार, यदि आप कविता पर कोई किताब पढ़ते हैं, जिसकी मैं अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ, तो कुछ ऐसी चीज़ पढ़ने के विचार की अत्यधिक सराहना करते हैं जो हमें कविताओं को बेहतर ढंग से पढ़ने में मदद करती है। लेकिन अगर आप कविता पर कोई किताब पढ़ेंगे, तो वे मृत रूपकों के बारे में बात करेंगे। लेकिन वास्तव में, रूपक मरे नहीं हैं।

यह एक ऐसा रूपक है जिसका प्रयोग इतनी बार किया जाता है कि अब हमें यह एहसास ही नहीं होता कि यह एक रूपक है। इसका मतलब यह मरा नहीं है. यह तो बस डूबा हुआ है.

और यह जितना अधिक मृत प्रतीत होता है, यह हमारे सोचने के तरीके के लिए उतना ही अधिक महत्वपूर्ण है। जब तक कि सबसे बुनियादी रूपक वे रूपक न हों जिनका उपयोग करने के बारे में हमें पता भी नहीं है। और मुझे लगता है कि श्लोक एक में यही हो रहा है।

और मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि यदि आप श्लोक छह को देखते हैं, तो श्लोक छह इस तरह समाप्त होता है, या कविता इस तरह समाप्त होती है, क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, लेकिन दुष्टों का मार्ग नष्ट हो जाता है या नष्ट हो रहा है या नष्ट हो जाएगा। . वह जीवन के पथ के बारे में बात कर रहा है। वह केवल जीवन के तरीके के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि उस वास्तविक मार्ग के बारे में बात कर रहा है जिस पर हम चलते हैं।

और इसलिए शुरुआत में, अंत में रूपक, शुरुआत में रूपक को दर्शाता है। यह एक समावेशन है, जैसा कि हमने भजन 113 में देखा था, लेकिन एक बहुत ही अलग तरह का, है ना? ये वही शब्द नहीं हैं। यह बिल्कुल वैसी ही तस्वीर है।

यह वही मूलभूत रूपक है। लेकिन फिर वह भजन 1 में कुछ बहुत दिलचस्प करता है। वह जो करता है उसे बदल देता है, बदल देता है। अब, मैं यहाँ कुछ हिब्रू सामग्री मिलाने जा रहा हूँ।

इसके बारे में खेद। यह बस ऐसे ही चलता रहता है। क्या इसका मतलब यह है कि यदि आप हिब्रू नहीं जानते तो आप भजन नहीं समझ सकते? ठीक है, आप उन्हें समझ सकते हैं, लेकिन मैं वादा करता हूँ कि आप उनकी उसी तरह सराहना नहीं करेंगे।

तो, आपके पास जीवन शेष है। पढ़ाई का समय है। और अगर आपको लगता है कि आप यह नहीं कर सकते, तो यरूशलेम के आसपास हर तरह के तीन और चार साल के छोटे बच्चे दौड़ रहे हैं जो धाराप्रवाह हिब्रू बोलते हैं।

यदि वे इसे तीन और चार बजे कर सकते हैं, तो आप इसे एक वयस्क के रूप में कर सकते हैं। मैं जानता हूँ कि यह एक स्मार्ट एलेक वक्तव्य है। क्षमा मांगना।

पद दो कहता है, परन्तु वह यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, और दिन रात उसी की व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है। अब, यहाँ जो बात चौंकाने वाली है वह यह है कि वह उस चीज़ से बदल जाता है जो व्यक्ति नहीं करता है जो वह करता है। और वह इसे दो अलग-अलग तरीकों से करता है।

श्लोक एक और दो के बीच अलगाव है जो वास्तव में तीन अलग-अलग तरीकों से होता है। एक तरीका सिर्फ शब्दों की सामग्री है, जिसे हम उनका अर्थपूर्ण मूल्य कह सकते हैं। यदि आप शब्दकोष में शब्दों को देखें, तो भगवान के कानून में दुष्टों, पापियों और ठग करने वालों के बीच का अंतर है, वहाँ एक बड़ा अंतर है।

खैर, हिब्रू में, बहुत बार जब आप क्रिया को अपने अंग्रेजी अनुवाद में देखते हैं या था या ऐसा कुछ देखते हैं, तो वहाँ कोई क्रिया नहीं होती है। और यह श्लोक दो की पंक्ति ए में सच है। तो, हमारे पास पद्य एक में समान क्रिया वाले तीन उपवाक्य हैं, और पद दो में कोई क्रिया नहीं है।

उसे कहना चाहिए, वाह, एक बदलाव है। याद रखें हमने असंततता के बारे में बात की थी, एक विराम है। और फिर जब हम क्रिया को श्लोक दो के दूसरे भाग में पाते हैं, तो यह क्रिया का एक अलग संयुग्मन है।

यह क्रिया का एक अलग प्रकार का भिन्न रूप है। इसलिए श्लोक दो को व्याकरणिक रूप से और उसकी सामग्री द्वारा निर्धारित किया गया है। अब आप भी सोचेंगे कि भला, मुझे इसे अंग्रेजी में कैसे पता चलेगा? आप सही हैं, आप यह सब अंग्रेजी में नहीं जान सकते।

इनमें से कुछ चीजें दृश्यमान हैं, कुछ अदृश्य हैं, और उनमें से कुछ उस अनुवाद पर निर्भर करती हैं जिसे आप देख रहे हैं। अलग-अलग अनुवाद अलग-अलग बातें सामने लाते हैं। तो वह हमें बताता है कि यह व्यक्ति क्या करता है, ध्यान करना या बुदबुदाना या दोहराना या बुदबुदाना या ऐसा ही कुछ।

अनुवाद करने के लिए एक बार फिर यह एक दिलचस्प शब्द है। लेकिन ऐसा लगता है कि इसका अनुवाद ध्यान करने का कारण यह है कि इसमें स्वयं से कुछ कहने या किसी की सांस के तहत कुछ कहने का विचार प्रतीत होता है। लेकिन फिर हम श्लोक तीन पर आते हैं।

और श्लोक तीन हमें श्लोक एक और दो का परिणाम देता है। और यह इसे एक रूपक के माध्यम से बहुत दिलचस्प तरीके से करता है। और यहाँ मूलभूत रूपक यह है कि लोग पौधे हैं।

केवल इस बार, वह हमें सिर्फ घास नहीं कहता, वह कहता है कि वह व्यक्ति एक पेड़ है। और वह सिर्फ एक पेड़ नहीं है। और फिर, यहां कुछ अनुवाद है।

यह कहता है कि आप पानी की धाराओं के किनारे मजबूती से लगाए गए एक पेड़ की तरह होंगे। दिलचस्प बात यह है कि। जिस क्रिया का अनुवाद मजबूती से किया गया है वह बाइबल में केवल कुछ ही बार आती है।

लगभग हर बार इसका तात्पर्य किसी पौधे का एक टुकड़ा लेना, उसे स्थानांतरित करना और उसे कहीं और रोपना, या जिसे हम रोपाई कहते हैं, से होता है। वह जानबूझकर एक पेड़ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना है ताकि वह बड़ा हो सके। इस वाक्य के बारे में दूसरी दिलचस्प बात, यह खंड, यह है कि अनुवादित धाराएँ शब्द, या आपके पास चैनल या कुछ और हो सकता है, एक ऐसा शब्द है जिसका अनुवाद आमतौर पर नहर किया जाता है या इसका अनुवाद खाई भी किया जा सकता है।

यह सिंचाई के लिए उपयोग की जाने वाली एक जलधारा है। यानी यह कोई प्राकृतिक जलधारा नहीं है। यह कोई नाला या खाड़ी या उसके जैसा कुछ नहीं है।

वैसे भी इजराइल में वास्तव में उनमें से बहुत सारे नहीं हैं। यह पौधों को पानी देने के लिए जानबूझकर खोदी गई खाई है जिसे जहां है वहीं डाल दिया जाता है, जहां है वहीं बना दिया जाता है। अब, इससे कुछ पता चलता है।

और फिर वह चलता रहता है, मुझे कहना चाहिए, वह चलता रहता है, वह अपने मौसम में अपना फल देता है, उसका पत्ता नहीं मुरझाता। इसलिए वह हमें इस पेड़ के बारे में बताकर रूपक का विस्तार करता है। भला, यह अपने मौसम में ही फल क्यों देता है? क्योंकि इसकी देखभाल की जाती है।

देखिए, आपने इस पर ध्यान दिया। जो व्यक्ति उन चीजों को नहीं करता है वह श्लोक एक में गलत जीवन यात्रा नहीं करता है, लेकिन जो श्लोक दो में शिक्षण में यहोवा के कानून में ध्यान करता है, उसे इसके लिए तैयार जगह में प्रत्यारोपित किया गया है ताकि यह विकसित हो सके।

मौसम के बदलाव और उलटफेर से सुरक्षित रहेंगे। दरअसल, जब वह वहां होगा तो सही समय पर फल देगा और उसकी पत्तियां नहीं मुरझाएंगी।

अब देखिए, इसमें कुछ सांस्कृतिक चीज़ है। उत्तरी अमेरिका में, कम से कम, सेब के पेड़ हर पतझड़ में अपने पत्ते खो देते हैं। आड़ू के पेड़ भी ऐसे ही हैं और मुझे लगता है कि कीनू के पेड़ और ऐसी ही चीज़ें भी हैं।

लेकिन अगर आप अन्य प्रकार के पेड़ों के बारे में बात कर रहे हैं, जैसे कुछ खट्टे पेड़ जो उष्णकटिबंधीय या अधिक उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में उगते हैं, या आप कनान, इज़राइल और फिलिस्तीन के अधिकांश फलों के पेड़ों के बारे में बात कर रहे हैं, तो वे सभी हरे रहते हैं वर्ष के दौरान। वे अपने पत्ते नहीं गिराते। इसलिए, जब वह कहते हैं कि इसकी पत्ती मुरझाती नहीं है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि सर्दी कभी नहीं आती।

इसका मतलब है कि इसमें इतना पानी है कि यह सूखता नहीं है। यदि इसकी पत्तियाँ सूख जाएँ, तो पेड़ मर जाएगा। इस संस्कृति में इसका यही अर्थ है।

तो, यह कहने का मतलब है कि इसकी पत्ती नहीं मुरझाती है, इसका मतलब है कि पेड़ मरने वाला नहीं है क्योंकि इसके लिए प्रावधान किया गया है। तो, प्रभु ने जो कहा है उस पर ध्यान करने का कार्य एक व्यक्ति को एक ऐसी जगह में स्थानांतरित करने जैसा प्रभाव डालता है ताकि वह जीवित रह सके। वैसे, इसके नीचे एक और मूलभूत रूपक है, और वह यह है कि भगवान एक माली हैं।

यह सब जगह भी है, है ना? इज़राइल एक लता है, ईजेकील की किताब पढ़ें। प्रभु ने कितनी बार बेल लगाई और देवदार के पेड़ का एक टुकड़ा लगाया? क्या यह बिल्कुल भी परिचित लगता है कि यीशु अपने बारे में बात कर रहे हैं कि वह दाखलता है और पिता क्या करने जा रहा है? मेरे अंदर की हर शाखा जो फल नहीं लाती, वह होगी... तो, छवि ही सब कुछ का आधार है। आप देखिए, विशिष्ट रूपकों के बजाय मूलभूत रूपकों के संदर्भ में सोचना मुझे वास्तव में रोमांचक लगा।

क्योंकि मूलभूत रूपक अचानक आपको संपूर्ण धर्मग्रंथ के माध्यम से एक रास्ता देखने देता है और दिखाता है कि ये सभी चीज़ें जो आप सहज रूप से महसूस करते हैं, ओह, वे किसी तरह से संबंधित हैं, वे संबंधित हैं। वे संबंधित हैं। वे इस आधार से संबंधित हैं जो नीचे निहित है और जो उन तरीकों से बोलना भी संभव बनाता है।

और वैसे, संयोगवश, माली के रूप में ईश्वर के अंतर्गत एक और भी गहरा मूलभूत रूपक है, और वह यह है कि ईश्वर एक व्यक्ति है क्योंकि माली लोग हैं, है ना? तो, और यह सभी प्रकार की अन्य भूमिकाओं में भी शामिल होता है। ईश्वर राजा है, ईश्वर न्यायाधीश है, ईश्वर शासक है, ईश्वर योद्धा है, ईश्वर सभी प्रकार की चीज़ें हैं। खैर, आइए भजन 1 में थोड़ा आगे बढ़ें। श्लोक 3 में, यह कहा गया है, वह जो कुछ भी करता है, उसमें वह समृद्ध होता है।

अब, मैं एक पल के लिए भी बहस नहीं करने जा रहा हूँ, या इसके धर्मशास्त्र के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि इस समय वास्तव में यही उद्देश्य नहीं है। आपने देखा कि इन सभी व्याख्यानों में, मैं वास्तव में धर्मशास्त्र को समझने या उसे लागू करने से पहले भजन को समझने की कोशिश करने के बारे में बात कर रहा हूँ। यदि हमारा धर्मशास्त्र और यदि हमारा अनुप्रयोग पाठ और कविता की सहानुभूतिपूर्ण समझ से बाहर नहीं निकलता है, तो वास्तव में एक आत्म-जागरूक आनंद, मुझे लगता है, पाठ में ही, वह जिस तरह से चीजों को कह रहा है, एक प्रशंसा है।

मुझे लगता है कि हम गलत तरीके से धर्मशास्त्र को लागू करने और गलत व्याख्या करने में सक्षम हैं क्योंकि हमने वास्तव में इसमें जो कहा गया है उसके साथ संघर्ष नहीं किया है। हमने एक तरह से एक धारणा छीन ली है। आइए टीएस एलियट के संतुलनकारी कार्य पर वापस जाएं।

लेकिन यहां श्लोक 3 में, बहुत दिलचस्प, हिब्रू में क्रिया बनाने के कई तरीके हैं। मुझे नहीं पता कि इसे तुरंत कैसे समझाऊं, लेकिन अंग्रेजी में हम सहायक क्रियाओं का उपयोग करते हैं। तो, हम कह सकते हैं, जॉन ने गेंद बिल की ओर फेंकी, या गेंद जॉन द्वारा बिल की ओर फेंकी गई।

तो, हम कुछ निष्क्रिय बनाना चाहते हैं, फेंक दिया गया था। हम क्रिया को मान लेते हैं और उसका एक रूप दूसरी क्रिया के आगे चिपका देते हैं। यह वास्तव में अपरिष्कृत है, लेकिन यह एक तरह का विचार है।

हिब्रू ऐसा नहीं करता। इसके बजाय, वे स्वरों को थोड़ा बदल देते हैं। हम इसे थोड़ा अंग्रेजी में करते हैं।

तो, हम कहते हैं दौड़ बनाम दौड़ या तैरना बनाम तैरना। हम स्वर बदलते हैं, लेकिन हम क्रिया काल को बदलने के लिए ऐसा करते हैं। हिब्रू ऐसा करता है, और यह बहुत अनुचित है।

इसलिए, यदि आप हिब्रू जानते हैं, तो आपको पता चल जाएगा कि मैं धोखा दे रहा हूँ। लेकिन हिब्रू स्वर बदलकर ऐसा करता है। हिब्रू स्वरों को बदलकर और आगे और पीछे अक्षर जोड़कर क्रिया के कार्य को बदल देता है।

खैर, भजन 1 में एक को छोड़कर सभी क्रियाएँ समान हैं, जिन्हें हम स्टेम कहते हैं। अर्थात् उनमें स्वरों का मूल स्वरूप एक ही है। श्लोक 3 के अंत में यह क्रिया अपवाद है। कारण और उसका नाम वास्तव में मायने नहीं रखता।

मुद्दा यह है कि हमारे पास एक क्रिया है जो अपने रूप के कारण बाकी सभी क्रियाओं से अलग है। और वह क्रिया भजन के पहले खंड के अंत में आती है, जिसमें इस धन्य व्यक्ति का वर्णन किया गया है। यह एक और प्रकार की असंगति है, मैं मानता हूँ, अंग्रेजी में अदृश्य, हिब्रू में बहुत स्पष्ट।

वह विराम हमें दिखाता है कि श्लोक 3 और 4 के बीच का अंतराल, जिसे हम श्लोक 3 और 4 जानते हैं, जानबूझकर और जानबूझकर किया गया है। यह वास्तव में भजन, कविता के व्याकरण के ताने-बाने में ही निर्मित है। ठीक है, फिर कवि आगे बढ़ता है और दुष्टों के बारे में भूसी, दूसरी

तरह का पौधा, ऐसी चीज़ जिसकी आपको परवाह नहीं है, के बारे में बात करके वह फिर से यह विचार उठाता है कि लोग पौधे हैं।

तुम चाहते हो कि हवा उसे उड़ा ले। आप नहीं चाहेंगे कि यह आप पर चले क्योंकि यह चिपचिपा और खुजलीदार होता है। यदि आप कभी गेहूं के कंबाइन के पीछे खड़े हुए हैं, तो आप जानते हैं कि यह कैसा होता है।

और फिर वह कहता है, दुष्ट न्याय में खड़े न होंगे, और पापी धर्मियों की सभा में खड़े न होंगे। और यहां आप देखिए, हमें थोड़ा अनुमान लगाना होगा। हम वास्तव में नहीं जानते.

क्या इसका मतलब यह है कि, क्या वह स्टैंड शब्द का उपयोग कर रहा है? क्या उसका वास्तव में खड़े होने का इरादा है? क्या इसका मतलब यह है कि यदि आप निर्दोष हैं, तो आप अदालत में खड़े हुए? लेकिन कम से कम वह जो कह रहा है वह यह है कि वह अब यह कहने के लिए रूपकों को बदल रहा है कि एक न्यायाधीश है, शायद भगवान एक न्यायाधीश है, और शायद लोग आरोपी हैं। और फिर अंत में, जैसा कि मैंने कहा, हम इस चित्र पर वापस आते हैं, प्रभु धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नष्ट हो जाता है। और फिर, हिब्रू में, यह कविता उन चियास्मों में से एक है।

यह कहता है, क्योंकि वह प्रभु को जानता है, धर्मियों का मार्ग, दुष्टों का मार्ग नष्ट हो जाता है। तो क्रिया, क्रिया, और वास्तव में, जो इतना अच्छा है, यह लगभग अवर्णनीय है। श्लोक छह की शुरुआत में वह जिस क्रिया रूप का उपयोग करता है वह एक कृदंत है, जो इस तरह लगता है, ओई ।

ठीक है, वे स्वर हैं, ओई । योडिया । वह अंत में जिस क्रिया का उपयोग करता है वह वह क्रिया है जो टोवाडे कहती है , वही स्वर हैं, हालांकि कृदंत नहीं है।

तो वह कृदंत का उपयोग क्यों करता है? वास्तव में, यह केवल दूसरा कृदंत है जिसका उपयोग उसने पूरे भजन में किया है। वास्तव में, यह एकमात्र विधेय कृदंत है, यानी पूरे भजन में क्रिया के रूप में उपयोग किया जाने वाला एकमात्र कृदंत है। वह वहां अपूर्ण या किसी अन्य चीज़ के बजाय कृदंत का उपयोग क्यों करता है जिसका वह उपयोग कर सकता था और जिसका उपयोग वह अंतिम कविता में करता है? क्या ईश्वर के जानने और नष्ट होने के तरीके में कुछ अंतर है? या फिर वह चाहता था कि ध्वनि वैसी ही हो? मुझे वास्तविक होना होगा, मैं यहां अस्थिर स्थिति में हूं क्योंकि, आप जानते हैं, स्वर बहुत बाद में जोड़े जाते हैं।

लेकिन कम से कम हमें इस बारे में सोचना चाहिए. इसे बहुत सावधानी से व्यवस्थित किया गया है। मुझे लगता है कि हमें यह कहना होगा कि इसका कुछ उद्देश्य है।

अच्छा, मुझे अपनी बात समाप्त करने दीजिए। मेरे पास लगभग दो मिनट हैं. यह कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

मैंने इरादा किया था, मैंने सोचा था कि मेरे पास थोड़ा और समय होगा, लेकिन मेरा इरादा आपको एक कविता पढ़कर सुनाने का था और फिर आपको यह बताने का था कि इसे समझने से पहले मैंने इस कविता के बारे में सोचने में तीन साल बिताए। मैं इसे आपको पढ़कर नहीं सुनाऊंगा। वह कविता विलियम बटलर येट्स की थी।

19वीं सदी के एक और अद्भुत ईसाई कवि, जेर्ग मैन्ली हॉपकिंस की कुछ अन्य रचनाएँ हैं जिन्हें समझने की कोशिश करने के लिए मैंने कई, कई, कई बार पढ़ा है। यहाँ एक प्रश्न है। बाइबल को समझने में धैर्य की क्या भूमिका है? कविता की उपस्थिति कहती है, धीरे करो, सोचो, चिंतन करो, कल्पना करो।

भगवान हमारे साथ इस तरह से संवाद करते हैं क्योंकि वह जानते हैं, सबसे पहले, कि यह कुछ विचारों को संप्रेषित करने का एक बेहतर तरीका है। दूसरे, यह कुछ लोगों के साथ संवाद करने का एक बेहतर तरीका है। लेकिन वह यह भी जानता है कि इस तरह से संवाद करना हमारी भलाई के लिए है।

यह हमें सोचने में समय बिताने के लिए मजबूर करता है। यानी, लंबे समय में, आप कह सकते हैं, ठीक है, मैं उन सभी चीजों को याद नहीं कर सकता जिनके बारे में आप बात कर रहे हैं, समानता, संरचनाएं और शैली। मैं बस नहीं कर सकता।

ठीक है। इसके बारे में कोई चिंता मत करो। बस यही करो।

प्रत्येक पंक्ति के बीच में एक खाली पंक्ति के साथ कागज के एक टुकड़े पर कविता लिखें और फिर बस इसे देखें, और इसे एक महीने तक हर दिन, दिन में दो या तीन बार ज़ोर से पढ़ें। यदि आपमें धैर्य नहीं है तो यह एक सप्ताह है। और फिर नोट्स बनाना शुरू करें।

हर बार जब आप कहते हैं, ओह, यह शब्द उस शब्द जैसा लगता है, रंगीन पेंसिल का उपयोग करें, रेखाएँ बनाना शुरू करें, और कनेक्शन देखना शुरू करें। और क्या होगा कि आप देखेंगे कि पाठ की सुंदरता उसके संदेश की सुंदरता भी है। यह आशीर्वाद है, महान आशीर्वाद है, पढ़ने और अध्ययन करने और परमेश्वर के वचन को समझने की कोशिश करने का विशेषाधिकार प्राप्त होना।

धन्यवाद। यह एक कविता है जिसे मैंने पढ़ा है, अंततः इसे समझने से पहले मैंने लगभग तीन साल लगातार पढ़ते रहे। और वास्तव में तभी जब मैंने इसे याद कर लिया, तो यह अब मेरी स्मृति में नहीं है।

विलियम बटलर येट्स द्वारा द सेकेंड कमिंग। चौड़े होते चक्र में घूमने-फिरने से बाज़ बाज़ को नहीं सुन पाता। चीजे अलग हो जाती है।

केंद्र पकड़ नहीं सकता। दुनिया में केवल अराजकता फैली हुई है। रक्त-रंजित ज्वार ढीला हो गया है और हर जगह मासूमियत का समारोह डूब गया है।

सर्वोत्तम लोगों में संकल्प की कमी होती है जबकि सबसे बुरे लोग भावुक तीव्रता से भरे होते हैं। निश्चित रूप से कुछ रहस्योद्घाटन हाथ में है। निश्चित तौर पर सेंकड कमिंग जल्द आने वाला है।

दूसरी बारी। शायद ही वे शब्द बाहर आते हैं जब स्पिरिटस मुंडी की एक विशाल छवि मेरी दृष्टि को परेशान करती है। रेगिस्तान की रेत में कहीं, एक आकृति जिसका शरीर शेर का और सिर आदमी का है, एक दृष्टि शून्य और दयनीय है जैसे सूरज अपनी धीमी जाँघों को हिला रहा है जबकि इसके चारों ओर क्रोधित रेगिस्तानी पक्षियों की वास्तविक छायाएँ हैं।

अँधेरा फिर छंट जाता है। लेकिन अब मुझे पता है कि बीस शताब्दियों की पथरीली नींद एक झूलते हुए दुःस्वप्न से परेशान थी। और वह कौन सा क्रूर जानवर है, आखिरकार उसका समय आ गया है, वह जन्म लेने के लिए बेथलहम की ओर झुक रहा है। विलियम बटलर येट्स.